भगवान् द्वारा प्रदत्त दान के कुछ रोचक प्रसंग

(स्वामी डॉ० विश्वामित्र जी महाराज)

'कल्याण' के जनवरी 2011 के दान महिमा-अङ्क से

शास्त्रों में दान की अपार महिमा का प्रतिपादन है। दान यदि कर्तृत्वाभिमान से रहित होकर दिया जाय, तो अन्त:करण पवित्र होता है, इसी लिये दान को आत्मशुद्धि का श्रेष्ठ साधन बताया गया है। किसी अभावग्रस्त को-ज़रूरतमन्द को उसके अभाव या आवश्यकता की आंशिक अथवा पूर्ण पूर्ति के लिये कुछ देना दान कहलाता है। इस का दया से, संवेदनशीलता से तथा उदारता से गहरा सम्बन्ध है। देने का सामर्थ्य होने पर भी हरेक का स्वभाव देने का नहीं होता। गाँव में तोतों को यह बोलना सिखाया जाता था -

'लटपट पंछी चतुर सुजान सब का दाता श्री भगवान।'

रहीम जी किसी ज़रूरतमन्द को देकर सिर झुका लेते। किसी ने कारण पूछा ? कहा -

देनहार कोउ और है देत रहत दिन रैन।
लोग भरम मो पै करें या ते नीचे नैन।।

कबीर साहिब की वाणी भी ऐसा ही सन्देश देती है-

न कुछ किया न कर सका न कुछ किया शरीर।
जो कुछ किया सो हरि किया कहत कबीर कबीर।।

भगवान् अपनी दयालुता के कारण जीव को सदा कुछ देते ही रहते हैं और समर्थ मनुष्य को यह सन्देश देते हैं कि तुम भी लाचार और विवश प्राणियों को तन-मन और धन से कुछ देकर उनके इस कार्य में सहभागी बनो, यहाँ इसी भाव-बोध की कुछ घटनाएँ प्रस्तुत हैं -

बहुत समय पहले की बात है - एक सन्त अन्य साथियों के साथ बदरीनाथ जी के दर्शनार्थ जा रहे थे। मार्ग में पाचन बिगड़ गया, कई बार मल-त्याग के लिये रुकना पड़ता। साथियों को असुविधा होने लगी, धीरे-धीरे वे साथ छोड़ आगे बढ़ने लगे। सन्त प्रतिदिन दुर्बल होते गये। अन्तत: जंगल में एक छोटी-सी गुफा में गिर गये। इतना कष्ट होते हुए भी राम नाम-स्मरण सतत चलता रहा। मन-ही-मन प्रभु से अरदास की-'यदि यही तेरी इच्छा है तो यही पूर्ण हो, रोग-रूप में तेरा हार्दिक स्वागत है।' फरियाद करते-करते आँख लग गयी। अगले दिन सुबह ही एक वृद्ध हाथ में दही-भात का कटोरा और दूसरे में दवाई की पुड़िया लिये पधारे, बोले-'यह खा लो, जल्दी ठीक हो जाओगे।' सन्त ने वृद्ध की ओर ध्यान से देखा, पहचानने की कोशिश की पर निष्फल। भारी कमज़ोरी के कारण दृष्टि धुँधली थी। दवा-दही-खिचड़ी खा ली। वृद्ध ने कहा-'कल फिर आऊँगा, तीन दिन की अवधि है, पूरा कर लो तो पूर्णतया स्वस्थ हो जाओगे।' सन्त निरन्तर राम-राम भी जपते रहते तथा सोचते भी रहते-यहाँ सेवा-दान करने वाला कौन है यह? आखिर पूछ ही लिया-'कौन हैं आप?' 'पहले ठीक हो जाओ, फिर पूछना-लो, दवाई खा लो।' 'नहीं, पहले बताओ।' 'न बताऊँ तो?' 'मैं दवाई न खाऊँ तो?' 'मत खाओ, मैं जाता हूँ,' ऐसा कह कर वृद्ध चले गये। थोड़ी देर बाद लौट आये कहा, 'तुम दवा खा लो तो मैं जाऊँ।' सन्त ने कहा-'आप मेरे प्रश्न का उत्तर दो तो मैं दवा खाऊँ।' मधुर वार्तालाप पर वृद्ध मुस्कराये और चतुर्भुज रूप में प्रकट हो गये। सन्त श्री चरणों पर मस्तक नवाकर बोले, 'इतने सुनसान, निर्जन वन में आपके अतिरिक्त कौन आ सकता है?

हे प्रभु! क्या आप स्वयं दौड़-दौड़कर इसी प्रकार भक्तों को सेवा-दान देते हैं?' 'प्रिय भक्त! जब कोई मिल जाता है, तो उस के मन में सेवा की प्रेरणा भर देता हूँ, परंतु यदि कोई नहीं मिलता तो स्वयं सेवा के लिये उपस्थित हो जाता हूँ।' मनमोहक, रोचक वार्तालाप, जीवन को परमानन्द से परिपूरित करके प्रभु अन्तर्धान हो गये। परमेश्वर के इस आश्वासन से तथा सन्त रहीम एवं कबीर के उक्त कथनों से यही सुस्पष्ट होता है-

दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया।
नाम एक औषधि, दुखारी सारी दुनिया।
राम एक देवता, पुजारी सारी दुनिया।।

(2)

पुरानी बात है, एक सेठ थे ; नाम था मलूक चन्द सेठ। मलूक चन्द की कोठी के पास एक मन्दिर था। एक रात्रि किसी विशेष उत्सव पर देर तक भजन-कीर्तन होता रहा, सेठ रात्रि भर सो न सके। प्रातः पुजारी को खूब डाँटा-'नींद न आये तो दिन को कमाना कैसे? न कमाये तो खाये कहाँ से?' 'भगवान् बैठे हैं खिलाने वाले सेठ जी! तब क्या चिन्ता? निमित्त होता है पति का कमाना, पत्नी का भोजन बनाना, सब का दाता-पालनहार तो वह 'राम' ही है।' 'क्या वह एक-एक को आकर खिलाता है? हम नहीं खाते उसका दिया, स्वयं कमा के खाते हैं। यदि वह खिलाता है तो उसे बोलो - मुझे खिला के दिखाये। यदि 24 घण्टे के अन्दर-अन्दर न खिलाया तो तुम्हारी गरदन कटवा दूँगा।' पुजारी आँखें मूँद परमेश्वर से करबद्ध प्रार्थना करते हैं - 'हे राम! अपने नाम की एवं मेरी लाज रखना।' कहते हैं - भगवान् श्री कृष्ण को एक बार भोजन के लिये देरी हो गयी। रुक्मिणी ने कारण पूछा? कहा-'कोई एक भोजन खाने वाला रह गया था।' 'क्या आपने सब का पेट भरने की जिम्मेदारी ले रखी है?' 'हाँ' रुक्मिणी को विश्वास न हुआ, एक कीड़ा पकड़ कर उसे अपनी सिन्दूर की डिब्बी में बन्द कर दिया। अगले दिन प्रभु भोजन करने लगे तो, पूछा-'क्या सब को खिला आये?' 'हाँ, खिला आया'-द्वारकाधीश ने उत्तर दिया। 'पर क्या तुम्हें विश्वास नहीं?' 'नहीं' डिबिया उठा लायी, खोली देखा तो कीड़े के मुख में चावल का दाना। चावल का वह दाना डिबिया बन्द करते समय रुक्मिणी जी के तिलक से डिबिया में जा पड़ा था। भगवान् मुस्कराये कहा - 'रुक्मिणी! जो केवल मुझ पर निर्भर है, उसके भोजन का क्या, सब कुछ का दायित्व मुझ पर है।'

सेठ मलूक चन्द घोर जंगल में विशाल पेड़ की ऊँची डाल पर जा बैठा। कुछ समय बाद एक यात्री आया, थोड़ा आराम किया वृक्ष के नीचे, चलते समय अपना थैला भूल गया। थोड़ी देर बाद पाँच डाकू आये। एक ने कहा-'देखो तो थैले में क्या है? ओ! स्वादु भोजन!' दूसरे ने कहा-'पुलिस का षड्यन्त्र है या किसी व्यक्ति का?' पेड़ पर व्यक्ति दिखा, निश्चय हुआ, इसी की चाल है। नीचे उतरने को कहा, पूछा-'क्या भोजन तूने रखा है?' 'नहीं' जबरदस्ती नीचे उतारा, 'ले, भोजन खा।' 'नहीं खाऊँगा।' डाकुओं ने सेठ को थप्पड़-मुक्के मारे, भोजन खाना पड़ा स्वीकारते हुए कहा-'मान गये मेरे बाप!' चाहे किसी रूप में खिला-पत्नी, भक्त या चोरों के रूप में-खिलाने वाला तू ही है। भागा पुजारी के पास धन्यवाद किया और कहा-'पुजारी! जिस ने खिलाया, उसे खोजूँगा।' सेठ मलूक चन्द बन गये सन्त मलूक दास। इन सन्त के दर्शन मात्र से कइयों के जीवन बदले, सत्संग से हज़ारों तर गये। गाया करते 'कहत मलूक दास, छोड़ तैं झूठी आस, आनँद मगन होइ कै, हरि गुन गाव रे।।' अपना अमूल्य अनुभव गुनगुनाया करते -

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।।

इसका अर्थ यह नहीं कि हम पुरुषार्थ न करें। अजगर भी भोजन तलाश करता है, पंछी भी दाना चुगने जाता है, पर उतना ही ग्रहण करता है, उतना ही एकत्रित करता है, जितना मिल जाय तथा जितना आवश्यक हो। यह तो मनुष्य ही है, जिस ने अपनी झोली फैला रखी है कि जीवन भर भरता रहता है तो भी नहीं भरती-लोभ के कारण-

सब जग मारा लोभ ने द्रोह द्वेष ने जान।
इन्हीं को मारे जो जन वही सूरमा मान।।

(भक्ति प्रकाश)

लोभ-जैसी दुर्जेय वृत्ति को शिथिल करने तथा इस पर विजय प्राप्त करने का सर्व श्रेष्ठ साधन है 'दान'।

सन्त मलूक दास की गाथा एवं अन्य सन्तों के कथन भलीभाँति स्पष्ट करते हैं कि भगवान् ही एक मात्र दाता हैं। वे जिस से दिलवाना चाहें, वही देगा और जिस को दिलवाना चाहें, उसी को मिलेगा। यह तथ्य निम्नलिखित दृष्टान्त से भी पुष्ट होता है -

(3)

मध्य भारत के सुलतान निजामुद्दीन के लिये प्रसिद्ध था कि कोई उसके यहाँ से खाली हाथ न लौटता। दाता होने का अभिमान चरम सीमा पर। प्रशंसा में कहते - 'जिसे न दे भगवान् उसे देता है सुलतान।' इस चापलूसी से प्रसन्न हो कर सुलतान इतना देता कि याचक को दुबारा माँगना न पड़ता। बाबा मस्तराम रोज भिक्षा माँग कर खाते, किसी ने कहा - 'बाबा ! एक बार सुलतान से माँगो और रोज़-रोज़ माँगने का चक्कर खत्म करो।' बस, उसके द्वार पर इतना ही कहना - 'जिसे न दे भगवान् उसे देता है सुलतान।'

बाबा ज़ोर से ठहाका मार हँसे और कहा - 'पागल है वह, घमण्डी कहीं का, वह है कौन किसी को देने वाला? अरे! जिसे न देते भगवान्, उसे क्या देगा, कैसे देगा सुलतान?' बात सुलतान तक पहुँची, बुरी लगी, योजना बनायी। सुलतान एक ग्रामीण के वेश में बैलगाड़ी में तरबूज़ भर कर उसी मार्ग पर बैठ गया जिधर से बाबा नित्य निकलते। जैसे ही बाबा दिखे, झट से एक बढ़िया तरबूज़ बाबा को दे दिया। वापस लौट, ध्यान में बैठ गये बाबा। एक यात्री आया, उसके पास भी तरबूज़ था, पर छोटा। परिवार वाला था, अत: मन में विचार आया, बाबा अकेले इतने बड़े तरबूज़ का क्या करेंगे? छोटा ले लें। बाबा तुरंत बोले - 'भाई! यह तरबूज़ आप ले जाओ, छोटा इधर रख जाओ। मैं अकेला, तुम अनेक।' बाबा ने तरबूज़ काटा अति मीठा । उधर घर जाकर यात्री ने भी काटा, तरबूज़ भीतर हीरे-मोतियों से भरा हुआ था। अति प्रसन्न ; अकस्मात् पूँजी पा कर धनवान् हो गया। बाबा की जय, सब उन की कृपा का प्रताप है। अगले दिन बाबा पुन: भिक्षा के लिये निकले। देख कर सुलतान चकित - 'इतना धन पाकर अब भीख माँगने की क्या ज़रूरत?' 'कौन-सा धन?' 'वही जो कल तरबूज़ में भर कर दिया था।' बाबा खूब ज़ोर से हँसे बोले - 'सुलतान! जिसे न दे भगवान् उसे क्या देगा सुलतान? घमण्ड छोड़ो, देने वाला मात्र ईश्वर है, सुलतान की क्या हस्ती कि वह बिना रामेच्छा किसी को कुछ दे दे? यदि तुम देते हो तो रामेच्छा से और जिसके लिये दिया है राम ने, उसी के पास जाता है।' सारी घटना सुनायी। सुलतान के मुख से सहसा निकला 'दाता राम की जय हो।'

(4)

एक गृहस्थ का नियम था कि किसी महात्मा को खिला कर ही स्वयं खाते। एक दिन जो महात्मा जी आये, उन्होंने भोजन से पूर्व गोग्रास नहीं रखा, भगवान् को भोग भी नहीं लगाया। गृहस्थ के याद दिलाने पर साधु

ने कहा - 'बहुत दिनों तक उसे ढूँढने की चेष्टा की, अब समझ में आया कि भगवान् है ही नहीं। अत: मैं भोगादि नहीं लगाता।' गृहस्थ ने परोसी हुई थाली ली और कहा - 'आप-जैसे नास्तिक को खिला कर मैं पाप-संग्रह नहीं करना चाहता।' उसी समय आकाशवाणी हुई- 'अरे! यह तो बहुत समय से मुझे नहीं मानता, पर अब तक मैं इसे रोज़ भोजन खिलाता रहा और तुम मुझे मानने वाले होकर एक दिन भी इसे नहीं खिला पाये। यह कैसी नासमझी है?'

(5)

एक चोर ने चोरी की, कुछ न मिला, भारी वर्षा, पुलिस पीछा कर रही है। भागता-भागता चोर एक सन्त-कुटीर पर पहुँचा, दस्तक दी। भीतर से पूछा - 'कौन है? ' सन्त के साथ झूठ नहीं बोलना चाहिये, अत: सच-सच कहा- 'चोर हूँ।' 'भाग यहाँ से।' 'बाबा! क्या यह सच बोलने का दण्ड है?' 'कुछ भी समझो, मैं कुटिया में घुसने नहीं दूँगा।' पुलिस पीछे लगी है, चोर रोने लगा, तभी आकाशवाणी हुई - 'तुम्हें आज पता चला, मुझे तो कब से पता है कि यह चोर है, फिर भी मैंने इसे अपने संसार रूपी घर से निकाला नहीं, धरती पर रहने दे रहा हूँ, तू एक रात रख लेता तो तेरा क्या बिगड़ जाता? मैं कब से इसे सपरिवार पेट भर भोजन दे रहा हूँ।' इसका अर्थ स्पष्ट है - राम देते समय आस्तिक - नास्तिक, अच्छा-बुरा, पापी-पुण्यात्मा है, नहीं देखते, प्रेमपूर्वक सब को बाँटते हैं। ऐसा प्रेम यदि हमारे हृदय में भी हो तो प्रभु राम हम पर अति प्रसन्न हों।

(6)

बाल्यावस्था के सखा सुदामा अपने प्रिय मित्र द्वारकाधीश के दर्शनार्थ पधारे हैं। दरिद्र हैं, अत: द्वारपाल भगवान् श्रीकृष्ण से मिलने से रोकता है, परंतु 'सुदामा' शब्द सुनते ही प्रभु भागे और उन्हें अपने साथ लाकर सिंहासन पर आसीन कर लिया। पूछा - 'भाभी ने क्या भेजा है मेरे लिये?' रानियाँ उपहास करें - यह क्या लायेगा? बगल में से पोटली छीन, उसमें से तन्दुल (चिउड़े) चबाकर मित्र की दरिद्रता का भक्षण कर लिया। मस्तक पर लिखे कुलेख - 'श्रीक्षय' अर्थात् दारिद्र्य को सुलेख में बदल दिया - 'यक्षश्री' कर दिया। 'सुदामा! तेरे पास इतनी पूँजी - सम्पत्ति होगी, जितनी कुबेर के पास।' सुदामापुरी भी वैसी ही भव्य एवं सुन्दर जैसी द्वारकापुरी। कैसे विलक्षण दाता हैं श्रीभगवान्!

(7)

यह सर्वविदित है, सर्वमान्य है तथा सभी का अनुभव भी है कि बन्दे के देने से अल्पकालिक राहत तो मिलती है, परंतु स्थायी शान्ति तो तभी मिलती है जब परमात्मा अपनी मंगलमयी कृपा से स्वयं देते हैं। इस रोचक एवं सुन्दर आख्यायिका से यह यथार्थता भलीभाँति निरूपित होती है -

एक मारवाड़ी सेठ का विपुल सम्पत्ति छोड़ कर निधन हुआ। इकलौता पुत्र दुराचारी निकला, कुव्यसनों से एवं कुकृत्यों में सारा धन बरबाद कर दिया। कंगाल-सा हो गया, घर में भोजन के लिये भी कुछ न बचा। एक दिन पत्नी ने कहा - 'स्वामिन् ! कुछ मैं करती हूँ, कुछ आप करें तो दो समय की रोटी हमें मिल जाया करेगी।' स्त्री ने सूत कातने, आटा पीसने एवं धान कूटने का काम शुरू किया और पति जंगल से घास - लकड़ी काटने तथा मज़दूरी करने लगा। कड़ी मेहनत का तनिक भी अभ्यास नहीं था, एक दिन थका-माँदा, भाग्य के ऐसे क्रूर परिवर्तित हथकण्डे देख कर फूट-फूट कर रोने लगा। उसी समय श्रीभगवान् लक्ष्मी जी के संग विचरते हुए निकले। बिलखते हुए युवक को देख लक्ष्मी जी ने कहा - 'प्रभु! देखो, मेरे बिना जीव का कैसा हाल होता है, जब पास थी, तब क्या था, अब नहीं हूँ, तब क्या है?' श्रीनारायण ने कहा - 'नहीं लक्ष्मी ! ये दुर्दशा तेरे कारण नहीं,

मेरी कृपा सिर से उठ जाने के कारण है। यदि तू नहीं मानती तो इसे पुनः धनी बनाकर देख ले।' लक्ष्मी ने बोझ उठाये युवक के आगे दो लाल (माणिक) फेंके, युवक ने उन्हें जेब में डाला, रास्ते में प्यास बुझाने के लिये नदी - किनारे झुका, लाल पानी में गिर गये। खाने वाली वस्तु समझ मछली उन्हें निगल गयी। खाली हाथ घर, पत्नी सहित पश्चात्ताप। अगले दिन पुनः जंगल में, आज माँ लक्ष्मी ने मोतियों की माला फेंकी, उठा कर पगड़ी में रखी, स्नान के लिये नदी में उतरते समय पगड़ी उतार कर रख दी, हार सहित पगड़ी चील उठाकर उड़ गयी। पुनः खाली हाथ घर। तीसरे दिन फिर वन में, आज अशर्फियों की थैली रखी माँ ने, उठायी और सीधे घर। पत्नी घर नहीं थैली रख कर उसे बुलाने गया। देर लगी, पड़ोसिन उठा कर ले गयी। पुनः खाली, चौथे दिन जंगल में घास काटते देख लक्ष्मी ने कहा - 'हे प्रभो! मैं हार गयी, अब आप ही कुछ करें।' भगवान् ने ताँबे के दो सिक्के फेंके, युवक ने माथे पर लगाये। घर लौटते समय मछुआरे से एक पैसे की मछली खरीदी। एक पेड़ पर चढ़ा, सूखी लकड़ी की टहनी काटने लगा तो एक घोंसला दिखा, उस में हार-सहित अपनी पगड़ी दिखी, उठायी, प्रसन्नता पूर्वक घर पहुँचा, ऊँचे स्वर से पुकारा - 'सुलक्षणी, सुलक्षणी ! जो खोई थी, मिल गयी।' पड़ोसिन ने आवाज़ सुनी, अपमान-दण्ड से भयभीत, मिलने के बहाने आयी और थैली वापस रख गयी। दोनों प्राणी अपार हर्षित, भोजन की तैयारी, मछली काटी, पेट से लाल निकले। आनन्द-ही-आनन्द छा गया। परमेश्वर-कृपा का चमत्कार।

संसार से तो भीख मिलती है, वस्त्र मिलते हैं, भोजन मिलता है, धन-भूमि एवं अन्य पदार्थ मिलते हैं। संसारी दान तो दे सकते हैं, परंतु दीनता-दरिद्रता नहीं मिटा सकते, जन्म-जन्म की भूख-प्यास नहीं मिटा सकते, वह राम-कृपा से सब कुछ दे सकने वाले उस दाता के देने से ही मिटेगी। अत एव माँगना है तो भगवान् से माँगो, अन्यत्र माँगोगे तो माँगने की आदत पड़ जायगी, भिखमंगे बन जाओगे। भीख माँगना व्यवसाय बन जायगा। प्रभु से माँगोगे तो माँगने की इच्छा ही मिट जाएगी।

— o —